जैन लक्षणावली भाग-१ (०१६०२१)

सम्पादक – बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

ग्रन्थानुक्रम

Foreword----------vii

दो शब्द ---------- ११

सम्पादकीय ---------- १४

प्रस्तावना ---------- १-८८

लक्षणावली की उपयोगिता ---------- १

लक्षणावली में स्वीकृत पद्धति ---------- १

ग्रन्थ परिचय ---------- २-६९

षटखण्डागम ----------२

कसायपाहुड ---------- ५

समयप्राभृत ---------- ५

प्रवचनसार ---------- ६

पंचास्तिकाय ---------- ६

नियमसार ---------- ७

दर्शनप्राभृत ---------- ७

चारित्रप्राभृत ----------८

बोधप्राभृत ----------८

भावप्राभृत ----------८

मोक्षप्राभृत ---------- ९

द्वादशनुप्रेक्षा ---------- ११

मूलाचार ---------- ११

भगवती आराधना ---------- १५

तत्वार्थसूत्र ---------- १६

तत्वार्थधिगमभाष्य ---------- १६

पउमचरित्र ---------- १६

आप्तमीमांसा ---------- १७

युक्तनुशासन ---------- १७

स्वयंभूस्तोत्र ----------१८

रत्नकरण्डक ----------१८

सर्वार्थसिद्धि----------१८

समाधितंत्र ---------- १९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईष्टोपदेश ---------- १९
तिलोयपण्णत्ती ---------- २०
आचारांग ---------- २३
सूत्रकृतांग ---------- २५
स्थानांग ---------- २५
समवायांग ---------- २६
व्याख्याप्रज्ञप्ति ---------- २६
प्रश्नव्याकरणांग ---------- २७
विपाकसूत्रांग ---------- २७
औपपातिकसूत्र---------- २७
राजप्रश्नीय ---------- २८
जीवाजीवाभिगम ---------- २९
प्रज्ञापनासूत्र ---------- २९
सूर्यप्रज्ञप्ति ---------- ३०
जम्बूद्विपप्रज्ञप्ति ---------- ३०
उत्तराध्ययनसूत्र ---------- ३०
आवश्यकससूत्र ----------३१
दशवैकालिक ---------- ३२
पिण्डनिर्युक्ति ---------- ३४
ओधनिर्युक्ति ---------- ३४
कल्पसूत्र ---------- ३४
बृहक्लपसूत्र ---------- ३६
व्यवहारसूत्र ---------- ३६
नन्दीसूत्र ---------- ३७
अनुयोगद्वार ---------- ३७
प्रशमरतिप्रकरण ---------- ३८
विशेषावश्यकभाष्य ---------- ३८
कर्मप्रकृति ---------- ३९
शतकप्रकरण ---------- ४०
उपदेसरत्नमाला ---------- ४१
जीवसमास ---------- ४१
ऋषिभाषित ---------- ४३
पाक्षिकसूत्र ---------- ४३
ज्योतिष्करण्डक ---------- ४४
दि. प्राकृत पंच संग्रह ---------- ४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमात्मप्रकाश ---------- ४४
सन्मतिसूत्र ---------- ४५
न्यायावतार ---------- ४६
तत्वार्थवार्तिक ---------- ४७
लघीयस्त्रय ---------- ४७
न्यायविनिश्चय ---------- ४८
प्रमाणसंग्रह ---------- ४८
सिद्धिविनिश्चय ---------- ४८
पज्ञपुराण ---------- ४८
वरांगचरित ---------- ४८
हरिवंशपुराण ---------- ४९
महापुराण ---------- ४९
प्रमाणपरीक्षा ---------- ५०
तत्वार्थश्लोकवार्तिक ---------- ५०
आत्मनुशासन ---------- ५०
धर्मसंग्रहणी ---------- ५०
उपदेशपद ---------- ५१
श्रावकपज्ञप्ति ---------- ५१
धर्मबिन्दुप्रकरण ---------- ५२
पंचाशक---------- ५२
षडदर्शनसमुच्चय ---------- ५३
शास्त्रवार्तासमुच्चय ---------- ५३
षोडशकप्रकरण---------- ५४
अष्टकानि ---------- ५४
योगदृष्टिसमुच्चय ---------- ५४
योगबिन्दु ---------- ५४
योगविंशिका ---------- ५४
पंचवस्तुक ---------- ५५
तत्वार्थसूत्रवृति ---------- ५६
भावसंग्रह ---------- ५६
आलापपद्धति ---------- ५६
तच्चसार ---------- ५६
नयचक्र ---------- ५७
आराधनासार ---------- ५७
श्वे, पंचसंग्रह ---------- ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्मतिकाप्रकरण ---------- ५९
कर्मविपाक ---------- ६०
गोम्मटसार ---------- ६०
लब्धिसार ---------- ६४
त्रिलोकसार ---------- ६५
पंचसंग्रह संस्कृत ---------- ६६
जंबूद्विवपण्णत्ती ---------- ६७
कर्मस्तव ---------- ६९
षडशीति ---------- ६९
लक्षणावैशिष्टय ---------- ७०-८५
प्राकृत शब्दों की विकृति और उनका संस्कृत रुपान्तर ---------- ८६-७
शुद्धि पत्र ---------- ८८
जैन लक्षणावली (अ-औ) ----------१-३५२
अ ---------- १
आ ---------- १६५
इ ---------- २२९
ई ---------- २३८
उ ---------- २४२
ऊ ---------- २८६
ऋ ---------- २८७
ए ---------- २९२
ऐ ---------- ३०१
ओ ---------- ३०१
औ ---------- ३०३
परिशिष्ट---------- १-२२
लक्षणावली में उपयुक्त ग्रन्थों की अनुक्रमणिका ---------- १
ग्रन्थकारानुक्रमणिका ---------- १७
शताब्दीक्रम के अनुसार ग्रन्थकारानुक्रमणिका ---------- २०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org